भूमिका

मेरे जीवन में जब कभी भी संकट के पल आए और उनसे उबरने के लिए जब कोई भी सांसारिक सहारा नहीं दिखाई दिया, तब स्वाभाविक ही मेरा ध्यान ईश्वर की ओर गया और अंतरात्मा से उन्हें पुकारा । ऐसे समय में मेरे मन में जो भाव उठे उन्हें लिपिबद्ध करता गया और वे सभी भक्ति गीत के रूप में ''**भक्ति पुष्प**'' नामक पुस्तक में सन् 1991 में साहित्य अकादमी, दिल्ली के सौजन्य से प्रकाशित हुए। इसके पश्चात् भी जब मेरे मन में कुछ भाव जगे, उन्हें लिपिबद्ध करता गया और उसी के परिणामस्वरूप यह ''**सप्त सुमन**'' पुस्तक आपके हाथ में है।

भक्ति गीत के अलावा मेरी लेखनी और किसी भी विषय पर नहीं चलती थी किंतु एक बार जब मैं सर्दियों के समय में प्रात:कालीन भ्रमण पर निकला और झोपड़ियों में रहने वाले कुछ परिवारों को ओले और बरसात के कारण बिलखते हुए देखा तो एकाएक मेरी लेखनी समाज की विषमताओं पर चल पड़ी और जो कविता मैंने उस समय लिखी उसका शीर्षक है ''**गरीबी-अमीरी की खाई।**'' इसी प्रकार समय-समय पर जब भी कोई इस प्रकार की घटना घटित हुई, कुछ कविताएं लिखता गया और उन्हें इस संकलन के रूप में प्रकाशित करने का प्रयास किया है।

विषय के अनुसार 52 कविताओं को 7 खंडों में विभक्त किया गया है जो इस प्रकार से है:-

1. भक्ति गीत
2. मन का प्रबोधान
3. राजभाषा हिंदी
4. जल संसाधान
5. तन-मन का स्वास्थ्य
6. समाज सुधाार
7. मानवता

भले ही इन कविताओं में साहित्य की दृष्टि से कुछ कमियां हों किंतु इनमें नैतिक उत्थान हेतु बहुत अच्छे विचार हैं जिनके अनुसरण से एक आदर्श समाज का निर्माण संभव है । **मुझे आशा है कि इन कविताओं के माध्यम से जन सामान्य के नैतिक उत्थान में मदद मिलेगी ।**

नोएडा **(डॉ. भगवान दास पटैरया)**

तिथि : भाद्रपद सुदी सप्तमी संवत् 2067

दिनांक 14 सितम्बर सन् 2010 ई.

सप्त सुमन

समर्पण

पूज्य पिता जी एवं माता जी

स्व. श्री दुर्गा प्रसाद पटैरया (1914-1995)

एवं

स्व. श्रीमती रामा देवी पटैरया (1916-1986)

की पुण्य स्मृति में

डॉ. भगवान दास पटैरया

सप्त सुमन
विषय क्रम

क्रमांक	विषय	पृष्ठ
	अध्याय १ : भक्ति गीत	
1.	आगे इच्छा ईश	1
2.	जो तुम कराओ	3
3.	जैसी तेरी चाह	4
4.	तेरे पास रहूँ	5
5.	मैंने तुम्हें भुलाया	6
6.	मेरे तो रघुबर कृपालु	7
7.	श्रीराम चले होंगे	8
	अध्याय २ : मन का प्रबोधन	
8.	इंसान के अंदर	9
9.	गाड़ी छूट न जाए	10
10.	जीवन में बहार	12
11.	जो प्रभु की इच्छा	13
12.	मन की जलन	14
13.	वक्त लौट नहीं आता	15
14.	हरि नाम का प्याला	16
	अध्याय ३ : राजभाषा हिन्दी	
15.	प्रारंभ तो कीजिए	19
16.	लेखनी देवनागिरी में	20
17.	विकसित करना है हिन्दी	21
18.	विदाई राजभाषा प्रेमी की	22
19.	राजभाषा प्रेम	24
20.	संघ की राजभाषा	25
21.	हिन्दी कैसे आएगी	26
22.	हिन्दी में काम	27
	अध्याय ४ : जल संसाधन	
23.	कैसे होगी गुजर	29
24.	जीवन दाता जल	30
25.	जल महात्म्य	32
26.	जल विज्ञानीय चक्र	33
	अध्याय ५ : तन-मन का स्वास्थ्य	
27.	आरोग्य मंदिर जाइए	35
28.	ऐसी किश्मत	37
29.	दिल्ली का जीवन	38
30.	न करते न करने देते	39
31.	नव वर्ष हो मंगलमय	40
32.	मंगलमय नव वर्ष	41
33.	यादें छोड़ चले	42
34.	विजय अपने आप पर	43
35.	विश्राम की कौन कहे	44
36.	सच-सच बता दें	46
	अध्याय ६ : समाज सुधार	
37.	ईश्वर ही बचाएगा	49
38.	क्या कभी कोई पार पाएगा	51
39.	किसे वोट दें	52
40.	गांधी जी का सपना	53
41.	गाँव की ओर	55
42.	मामला बिजली-पानी का	57
43.	श्रद्धांजलि दिवंगत नेता को	59
44.	ससुर जी कहां जाएं	61
	अध्याय ७ : मानवता	
45.	अवला की करुण कहानी	63
46.	गरीबी-अमीरी की खाई	65
47.	गरीबी की रेखा	68
48.	मानवता को बचाओ	70
49.	मानव सेवा	72
50.	विषमता अंगुलियों जैसी	73
51.	शांति भाईचारा में	74
52.	पशु-पक्षी भले या हम	75

अध्याय १ : भक्ति गीत
आगे इच्छा ईश

चिन्ता किसकी करते रहते,
चुपचाप सदा गुनते रहते ।
विश्राम न मन को, एक भी पल,
फिर भी क्यों कभी नहीं थकते ।।1।।

दुनियां तो देखते रहते हो,
क्या अन्दर झाँक के देखा है ।
ऊपर से श्वेत वस्त्र उज्ज्वल,
क्या भीतर कालिख रेखा है ।।2।।

अंदर बाहर जब एक बनो,
तब ही प्रभु को पा सकते हो ।
इसके बिना कर लाख यत्न,
हासिल नहिं कुछ कर सकते हो ।।3।।

फिर इतने माया जाल में क्यों,
फंसते जाते हो किसके लिए ।
सब जिसके लिए करते रहते,
वे भाव भरे खुद तेरे लिए ।।4।।

सुख सागर के तट पै रहकर,
प्यासा सुख चैन का क्यों होता ।
तेरे प्रभु हरदम पास रहें,
फिर भी दुख दारिद क्यों रोता ।।5।।

पास जो तेरे है बंदे,
उसका उपभोग नहीं करता ।
ना जाने क्या पाने को सदा,
बेचैन उदास बना रहता ।।6।।

दोहा:- मकड़ी जैसे जाल को, खुद बुनते हो आप ।
फिर उसमें फँस रहे हो, सहते दुख परिताप ।।1।।
भय चिन्ता अरु दीनता, त्याग रहो प्रभु पास ।
हो प्रसन्न विचरो सदा, होना नहीं उदास ।।2।।
बीत गई सो भूल जा, लेना उससे सीख ।
जो बनता सो किए जा, आगे इच्छा ईश ।।3।।
भजन करें प्रभु का सदा, अस विचारि मन माँहि ।
'दास' कहें भव पार हों, इसमें संशय नाँहि ।।4।।

२
'जो तुम कराओ'

मुझे क्या है करना स्वामी, जो तुम कराओ ।
जो तुम कराओ मुझसे जब जब कराओ ।।
जब जब कराओ मुझसे जैसे कराओ ।
मुझे क्या है करना स्वामी............।।1।।
मुझे नहीं कोई गम, चाहे जो करो तुम ।
मेरी नजरों से दूर नहीं जाओ ।।
मुझे क्या है करना स्वामी............।।2।।
चाहे रखो महलों में चहे झोपड़ी में ।
मुझे अपने चरणों से दूर न भगाओ ।।
मुझे क्या है करना स्वामी............।।3।।
उतना ही देना प्रभु, जिसमें भजूं नित ।
तुझे नहीं भूलूं कभी जतन ये कराओ ।।
मुझे क्या है करना स्वामी............।।4।।
नहीं चाहूं कोई पद, नहीं धन दौलत ।
मुझे अपने चरणों का 'दास' बनाओ ।।
मुझे क्या करना स्वामी...........।।5।।

३
जैसी तेरी चाह

जैसी तेरी चाह स्वामी वही मंजूर ।
चरणों से नाथ नहीं कीजे कभी दूर ।।
फँसा हुआ दिवसनिशि, माया भ्रम जाल में ।
करता ना याद तुम्हें, हरदम हर हाल में ।।
मन ही ना मानें, क्या मेरा कसूर ।
चरणों से नाथ नहीं कीजे कभी दूर ।।1।।
पापी मन मेरा, ये कहना ना मानें ।
जाने क्या सोच रहा, हरदम अनजाने ।।
अब तो शरण लेना प्रभु मुझको जरूर ।
चरणों से नाथ नहीं कीजे कभी दूर ।।2।।
माया के दलदल में फँस जो गया हूं ।
तेरे सिवा कौन मेरा जिसको पुकारूं ।।
कोई नहीं मेरा प्यारे, तू ही मेरा नूर ।
चरणों से नाथ नहीं कीजे कभी दूर ।।3।।
सभी कर्म मेरे, तेरी सेवा बन जावें ।
आस यही मन में सदा, तुझको रिझावें ।।
काम क्रोध लोभ मोह करें न मजबूर ।
चरणों से नाथ नहीं कीजे कभी दूर ।।4।।
जानू न ज्ञान ध्यान, सेवा ना पूजा ।
तेरे सिवा जानू ना देव कभी दूजा ।।
झोली मेरी भक्ती से भर दो भरपूर ।
चरणों से नाथ नहीं कीजे कभी दूर ।।5।।

४
तेरे पास रहूँ

जब जब मैंने जैसे चाहा,
तुमने पूरण काज किया ।
भीर पड़ी जब जब प्रभु मुझ पर,
तुमने अपनी गोद लिया ।।1।।

मैं तो तेरा शिशु हूँ प्यारे,
तू ही मेरा है त्राता ।
तेरे बिना ना जानूं किसी को,
सुहृद सनेही पितु माता ।।2।।

ऐसी ही हो मन में भावना,
तेरा बन के जग में रहूं ।
सुख-दुख निन्दा स्तुति स्वामी,
सब सम जानके मस्त रहूं ।।3।।

तेरी इच्छा से ही जग के,
होते सारे कार्य कलाप ।
फिर क्यों चिंता हमको होवे,
क्यों न लीन हों नाम के जाप ।।4।।

शक्ति 'दास' को दीजे भगवन,
प्रतिपल तेरा नाम जपूँ ।
तन से जग के काज करूं सब,
मन से तेरे पास रहूँ ।।5।।

५
मैंने तुम्हें भुलाया

भगवन मैंने तुम्हें भुलाया,
प्रभु जी मैंने तुम्हें भुलाया ।
इसीलिए भवजाल में फंसकर,
अब तक दुख उठाया ।।
भगवन मैंने तुम्हें भुलाया।।1।।

मैं तो जीव ग्रसित माया में,
तन मन से लिपटाया ।
तुम तो अन्तर्यामी स्वामी,
क्यों नहिं आन बचाया ।।
भगवन मैंने तुम्हें भुलाया ।।2।।

यह माया बलवती तुम्हारी,
हरदम मुझे नचाया।
हार थका जब इससे रघुबर,
तब तेरे दर आया ।।
भगवन मैंने तुम्हें भुलाया ।।3।।

बहुतक भटकयो जनम जनम में,
प्रेम न दिल में समाया ।
तभी तो जब से बिछुड़ा तुमसे,
कभी चैन ना पाया ।।
भगवन मैंने तुम्हें भुलाया ।।4।।

करुणामय कर करुणा प्यारे,
करो दास पै दाया ।
जल्द दिखा दो अनुपम झांकी,
धन्य बने यह काया ।।
भगवन मैंने तुम्हें भुलाया ।
प्रभु जी मैंने तुम्हें भुलाया ।।5।।

६
मेरे तो रघुबर कृपालु

मेरे तो रघुबर कृपालु, दूसरो न कोई ।
जाके कर धानुष बाण, मेरो प्रभु सोई ।।
जब से सम्हारी सुरत, तेरी शरण आया ।
तेरे सिवा और रूप मन को न भाया ।।
निरख-निरख नयन छवि, अतिशय सुख होई ।
जाके कर धानुष बाण, मेरो प्रभु सोई ।। 1 ।।
जब-जब पुकारा नाथ, तुरत चले आए ।
जाने अनजाने मेरे, काज सब बनाए ।।
अब की बेर नाथ बड़ी, देर रही होई ।
जाके कर धानुष बाण, मेरो प्रभु सोई ।। 2 ।।
तुम्हें क्या सुनाऊँ, हो घट-घट के वासी ।
जियरा की पीर जानो, हरो अविनाशी ।।
जैसी तेरी चाह, मुझे मंजूर सोई ।
जाके कर धानुष बाण, मेरो प्रभु सोई ।। 3 ।।
बहुत कुछ हूं मांगता, पै देना वही स्वामी ।
जिसमें भला सभी का, हो अंतरयामी ।।
मैंने तो चरण रज की, आस है संजोई ।
जाके कर धानुष बाण, मेरो प्रभु सोई ।। 4 ।।
मुझे तो भरोसा है, पार करो भव से ।
दरस तो दिखाओ, है आस लगी कब से ।।
'दास' को न चिंता, जो होना सो होई ।
जाके कर धानुष बाण, मेरो प्रभु सोई ।। 5 ।।

७
श्री राम चले होंगे

यह मार्ग वही है, जिस पै कभी श्रीराम चले होंगे ।
यह क्षेत्र वही है, जहॉ पै कभी श्रीराम रहे होंगे ।।
धन्य वे लोग जो बसे यहाँ ।
दरसन करने जो आते यहाँ ।।
नर-नारि सभी वे धन्य बनें, जिनके मन राम बसे होंगे ।
यह मार्ग वही है, जिस पै कभी श्रीराम चले होंगे ।। 1 ।।
हम भी उनकी सृष्टि में थे ।
पर पता नहीं हम कहाँ पै थे ।।
हो सकता उनके संग कभी चित्रकूट गए होंगे ।
यह मार्ग वही है, जिस पै कभी श्रीराम चले होंगे ।। 2 ।।
रामघाट की छटा अनोखी ।
जाने वही है जिसने देखी ।।
यहीं पै तुलसी बाबा ने श्रीराम के दर्स करे होंगे ।
यह मार्ग वही है, जिस पै कभी श्रीराम चले होंगे ।। 3 ।।
अनुसूइया आश्रम दूर नहीं ।
बहती पयस्वनी पास वहीं ।।
यहीं पै सीता मैया ने अलौकिक गहने गहे होंगे ।
यह मार्ग वही है, जिस पै कभी श्रीराम चले होंगे ।। 4 ।।
चित्रकूट मन भावन है ।
इसका कण-कण अति पावन है ।।
यह भूमि वही है, जहां कभी प्रभु प्यारे भरत पधारे होंगे ।
यह मार्ग वही है, जिस पै कभी श्रीराम चले होंगे ।। 5 ।।

अध्याय २ : मन का प्रबोधन

इंसान के अंदर

अपनो के लिए तो सभी करते,
जरा गैर के लिए कुछ करके देखो ।
अपने दुख दर्द पर सभी रोते,
दूसरों के लिए तनिक रोकर देखो ॥1॥

जो सकून मिलेगा दूसरों के लिए,
कुछ कर दिखाने में ।
उस शांति को क्या बताऊँ,
मजा है खुद अजमाने में ॥2॥

तथ्य ये सत्य कि किसी को सताकर,
हम सुख शांति पा नहीं सकते ।
किसी का हक छीनकर,
मौज मस्ती मना नहीं सकते ॥3॥

समय अभी बाकी सम्हल जाने का,
फिर क्या होगा, जब उम्र ढल जाएगी ।
पछताते ही रह जाएंगे,
जब अंतिम घड़ी आ जाएगी ॥4॥

इंसान के अंदर ही अगर,
हम देख लें खुदा ।
फिर न कभी होंगे,
अपने प्रभु से जुदा ॥5॥

९

गाड़ी छूट न जाए

समय रहते पहुँच चलें,
कहीं देर न हो जाए ।
आरक्षित होने पर भी,
कहीं गाड़ी न छूट जाए ॥1॥

जीवन भी तो है एक लम्बी यात्रा,
हम सभी मुशाफिर ।
कहीं न कहीं जाने को,
कर रहे हैं इंतजार ॥2॥

कोई उतर रहा,
तो कोई चढ़ रहा ।
कोई साथी साथ आकर,
जाने की राह देख रहा ॥3॥

जाना सभी को,
देर सबेर कुछ भी हो ।
फिर तैयारी क्यों अधूरी,
अभी से कोशिश क्यों न हो ॥4॥

बटोरते धन दौलत,
जो न आऐगी किसी काम ।
करते न कमाई उस ज्ञान की,
जिसे कहते है सतनाम ॥5॥

सोचते कि बुढ़ापे में,
प्रभु भजन करेंगे ।
सब झंझटों से निपट,
तन मन से लगेंगे ॥6॥

पर तब तन भी न देगा साथ,
सिथिल होंगी इंद्रियां और मन ।
सुरत भी न रहेगी बस में,
फिर कैसे होगा भजन ।।7।।

सतनाम की कमाई तो,
रोज ही करनी होगी ।
अपनी मनो स्थिति पर,
नजर रखनी होगी ।।8।।

तब न होगा किसी से वैर,
करेंगे सभी से प्यार।
तभी हो सकेगा उद्धार,
और जा सकेंगे भव से पार ।।9।।

१०
जीवन में बहार

मेघों का आवास है जहाँ, वह मेघालय ।
है अति रम्य प्रकृति का उपहार हिमालय ।।1।।

हरिताच्छादित चतुर्दिश, लुभावनी मंद मंद बहार।
मानों कर रही प्रकृति माँ, हम बालकों से दुलार।।2।।

धूप छाँह की आंख मिचोनी, होती दिन में कई बार ।
निकल पड़ते अपने घरों से मेघ, करते सुख दायिनी बौछार ।।3।।

किसका न खिल उठेगा मन, इस स्वर्ग द्वार पर।
लुभावनी बेला में, प्रकृति सुंदरी के श्रृंगार पर ।।4।।

पर जिसके दिल में धधकते, अंगारे किसी ज्वाल के ।
यहाँ भी उसे चैन, न मिल पाए उस ख्याल से ।।5।।

अमन चैन तो मिलता है प्रभु प्रसाद से ।
इसीलिए कर्म करते जाएं, सत्यनिष्ठा आह्लाद से।।6।।

फिर मिलेगी सुख-शांति हर जां, आएगी जीवन में बहार ।
और हम करने लगेंगे, प्रकृति की हर कृति से प्यार ।।7।।

हर पल आती है जीवन में बहार, हमें भान होता नहीं ।
गुजर जाते हैं जीवन के पल, जो चाहते वह होता नहीं।।8।।

फिर क्यों गंवा रहे हैं, नफरत में अमूल्य क्षण ।
मानव की सेवा कर, करें प्रभु को अर्पण ।।9।।

लुटा चुके जो दौलत, न करिए गम बीती बात पर।
सम्हालिए बचे हर पल को, नजर रखिए सुप्रभात पर।।10।।

चिंता गम करने से, गम कम होता नहीं ।
कुछ करेंगे, कर दिखाएंगे, तब जहां चाहेंगे जाएंगे वहीं ।।11।।

नहीं होता है कभी चाहने पर भगीरथ प्रयास से भी ।
फिर भी जुटे रहें प्रभु विश्वास पर, न हार मानें कभी।।12।।

देर हो सकती है, पर कर्म फल निष्फल न जाएगा ।
आज नहीं तो कल, कभी न कभी अपना रंग लाएगा।।13।।

निष्काम कर्म ही है, भक्ति का अनूठा साधन ।
अपनाएं जो मन से, है धन्य उनका जीवन ।।14।।

११
जो प्रभु की इच्छा

सुबह टिफिन दिया पति को, और खुद गईं स्कूल ।
रास्ते में हृदय गति रुकी, होनी ही थी प्रतिकूल ।।1।।
पति को ऑफिस से बुलाया, सब क्रिया कर्म करवाया ।
धौर्य दिलाते हुए, सबने उन्हें ऐसा समझाया ।।2।।
क्या साथ लाए थे, क्या ले जाऐंगे । न साथ आए थे, न साथ जाऐंगे ।।3।।
जानते हैं हम, पर धैर्य होता नहीं । समझते हैं सब, पर त्याग-होता नहीं ।।4।।
समझाऐं मन को हर तरहां से, पर धैर्य पुल बह जाता है।
बस यहीं तो इन्सान का बस नहीं, कुछ समझ नहीं आता है।।5।।
जैसी भी पीर दिल में हो, धैर्य रखना ही होगा ।
हर परिस्थिति में अपने को सम्हालना होगा ।।6।।
आए थे अकेले, जो जाना भी अकेले ।
पर दुख यही, जो अंत समय न मिल सके ।।7।।
कैसे धौर्य हो, जब धैर्य भी न रख सके धैर्य ।
फिर भी बच्चों के लिए तो रखना ही होगा धैर्य ।।8।।
यही जीवन है, यही है जग की रीति ।
बिछुड़ कर चले जाते हैं, करते जिनसे घनिष्ट प्रीति ।।9।।
विरक्ति भाव जगा के ही हम रह सकेंगे ।
जो प्रभु की इच्छा, उसी को मान के ही जी सकेंगे ।।10।।

१२
मन की जलन

होता जब दर्द तन में,
एक गोली खा लेते ।
इंजैक्शन लगवाते,
या कुछ न कुछ उपचार कराते ।।1।।
पर नहीं बनी ऐसी दवा,
जो मिटा सके मन की जलन ।
उस समय बस एक ही आश्रय,
करें प्रेम से ईश्वर का भजन ।।2।।
इस हेतु एक नुस्खा,
जाना माना और अजमाया ।
जिसने भी अपनाया,
मन की जलन से मुक्त पाया ।।3।।
अगर बन जाए काम,
तो करो प्रभु का शुक्रिया ।
और यदि न हो सके,
तो समझो यही प्रभु की इच्छा ।।4।।
समझ ऐसा न करें चिंता,
करें केवल प्रभु नाम चिंतन ।
तो सदा के लिए मिट जाएगी,
हम सबके मन की जलन ।।5।।

१३
वक्त लौट नहीं आता

आज नहीं कल करते युग बीत जाता ।
बीत गया वक्त वो फिर लौट नहीं आता ।।1।।
आज बड़ी उलझन है, कल देख लेंगे ।
कौन जाने कल भाई, हम कहाँ पै होंगे ।।2।।
ऐसा विचार क्यों न मन को समझाता ।
बीत गया वक्त वो फिर लौट नहीं आता ।।3।।
गुत्थी ये सुलझे तो फिर कुछ करेंगे ।
झंझट ये निकले तो हरीहर भजेंगे ।।4।।
जीवन में ऐसा क्षण नहीं मिल पाता ।
बीत गया वक्त वो फिर लौट नहीं आता ।।5।।
जैसे जहाँ हो प्रभु का नाम गा लो ।
मानव की सेवा से बिगड़ी बना लो ।।6।।
यह न किया 'दास', तो फिर रहे पछताता ।
बीत गया वक्त वो फिर लौट नहीं आता ।।7।।

१४
हरि नाम का प्याला

पीना है तो पी लो हरि नाम का प्याला ।
इससे मीठा रस ना कोई, अद्भुत अजब निराला ।।1।।
याद में किसी की क्या गम को मिटाने ।
यार दोस्ती में मौज मस्ती उड़ाने ।।
कंपनी-डायरेक्टर से काम कुछ कराने ।
या अनजान भोलेपन में यों ही मन को लुभाने ।।
क्यों किसलिए किसकी प्रेरणा से पीते हो ।
व्यर्थ नशेबाजी में जिंदगी बर्बाद करते हो।।
पीना है तो पी लो हरि नाम का प्याला ।
इससे मीठा रस ना कोई अद्भुत अजब निराला ।।2।।
अनजाने बने नादान, क्या कभी सोचा इसका अन्जाम ।
घनिष्ठता बढ़ेगी उससे, ये केवल भ्रम, इससे न होगा कोई काम ।।
नशा वो घुन है जो तन को, करता रहता है खोखला ।
होश हो जाते पस्त न रहता काम करने का हौसला ।।
इस दुष्कर्म को कहते हैं महा पाप ।
आदत पड़ने पर न जाएगा अपने आप ।।
पीना है तो पी लो हरि नाम का प्याला ।
इससे मीठा रस ना कोई अद्भुत अजब निराला ।।3।।
अब करना होगा दृढ़ संकल्प, कि लेना तो दूर स्पर्श न करेंगे ।
जहाँ हो ऐसी कुसंगत, उससे दूर ही रहेंगे ।।
तभी पा सकोगे सबकुछ, जिसे पाने के लिए पीते हो
कर सकोगे वे सभी काम, जिसे करने के लिए जीते हो ।।
पीना है तो पी लो हरि नाम का प्याला ।
इससे मीठा रस ना कोई अद्भुत अजब निराला ।।4।।
वट वृक्ष भी तो था एक अंकुर, जिसे सहलाते थे आते जाते ।
काट सकती थी जिसे चींटी कभी, आज हाथी भी न उखाड़ पाते।।

चिनगारी होती छोटी सी, पर लपटों में बदल जाती ।
झूठ हो कितना छोटा, पर आदत तो बिगड़ ही जाती ।।
सर्प-शत्रु-पाप हों चाहे जितने छोटे, तबाह कर ही देंगे ।
फिर क्यों असमंजस में यों ही, हम कब तक फँसे रहेगे ।।

पीना है तो पी लो हरि नाम का प्याला ।
इससे मीठा रस ना कोई अद्भूत अजब निराला ।।5।।

नन्हा सा बच्चा सर्प का, प्यारा सलौना लगता ।
क्या पाल सकते घर में, जो विकराल जहर उगलता ।।
जानकर ये सब कुछ फिर भी नादान क्यों बनते हो ।
सिर्फ कंपनी सेक या मजाक में यों ही क्यों पीते हो ।।

पीना है तो पी लो हरि नाम का प्याला ।
इससे मीठा रस ना कोई अद्भुत अजब निराला ।।6।।

करो आज दृढ़ संकल्प कि सुरा की बूंद भी न लेंगे ।
ध्रूमपान सामग्री सब, एक साथ जला देंगे ।।
आदत एक दिन में नहीं बनती, कब बन जाती पता नहीं चलता ।
दिन रात जो यों गुजरते, कि हमें होश नहीं रहता ।।
यही सोच कभी भी, एक बार भी न पिओ ।
किसी और को भी न कष्ट दो, खुद सुख-चैन से जिओ ।।

पीना है तो पी लो हरि नाम का प्याला ।
इससे मीठा रस ना कोई अद्भुत अजब निराला ।।7।।

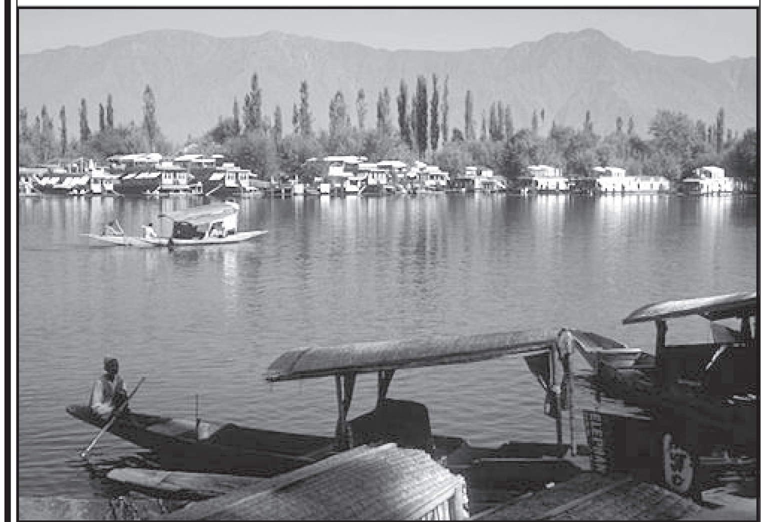

अध्याय ३ : राजभाषा हिन्दी

प्रारम्भ तो कीजिए

हिन्दी भाषी ही अगर,
हिन्दी अपनाने में हिचकिचाऐंगे ।
संविधान की मंशा के अनुरूप,
हम कार्यालयों में हिन्दी कैसे लाऐंगे ।।1।।

बहुत खोया वक्त,
अब न हो संकोच शब्द अपनाने में ।।
चाहे किसी भाषा के हों,
न करें परहेज देवनागिरी बनाने में ।।2।।

इस तरहाँ सतत अभ्यास से,
समृद्ध कीजे भाषा कोष ।
कैसे भी हो प्रारंभ तो कीजिए,
न देखिए भाषा दोष ।।3।।

भाव व्यक्त कर सकें,
यही हो हमारा प्रथम लक्ष्य ।
परिमार्जित होते जाऐंगे शब्द,
चाहे कोई भी हो परिप्रेक्ष्य ।।4।।

सरिता नीर निर्मल होता,
कालान्तर में बहते वहते ।
शब्द भी निखर आऐंगे,
प्रयोग करते करते ।।5।।

१६
लेखनी देवनागरी में

पत्र पाकर आपका प्रसन्नता अपार हुई ।
ये जान कि लेखनी देवनागिरी में शुरू हुई ।।1।।

आज हम हिंदी दिवस बड़े धूमधाम से मना रहे ।
क्या आजादी के शहीदों की भावनाओं की कद्र कर रहे ।।2।।

उनकी थी यह चाह कि हिंदी में हो देश का काम ।
राष्ट्रीय भाषा से ही, हम योजनाओं को देंगे सही अंजाम ।।3।।

फिर क्यों हम विदेशी भाषा बोल कर शान दिखाते ।
और इस तरहां हम अपनी ही भाषा का मान गिराते ।।4।।

देश एक, तिरंगा एक, राज्यों की राजभाषाएं अनेक ।
पर सभी राष्ट्रीय भाषाओं में से, संघ की राजभाषा एक ।।5।।

इसका उपयोग करके जन-जन को जोड़िए ।
अब कभी हिंदी के प्रयोग से मुख न मोड़िए ।।6।।

हिंदी अपना कर करेंगे हम उन शहीदों का सम्मान ।
जिन्होंने आजादी की लड़ाई में, निछावर किए अपने प्राण ।।7।।

हमको कुछ नहीं करना निछावर, प्राप्त करने हैं पुरस्कार ।
पर अब तो ध्यान रहे, कभी न हो राजभाषा हिंदी का तिरस्कार।।8।।

हिंदी है एकता का प्रतीक, इससे देश का गौरव बढ़ाइए ।
आज और अभी सच्ची लगन से राजभाषा हिंदी अपनाइए ।।9।।

१७
विकसित करना है हिन्दी

राजभाषा-राष्ट्रभाषा-मातृ भाषा हिन्दी,
हमें विकसित करना है ऐसी हिन्दी,
जो सरल-सुवोध हो।
सबके दिलों को छूती हो ।।1।।
इसमें लीजिए सभी भाषाओं के प्रचलित शब्द,
जो इतने घुल-मिल गए कि पराए लगते नहीं ।
हिन्दी को जो गरिमा मिली संविधान में,
इसे अविलंब दिलवाइए ।
अब और विलंव न कर, असली रूप में,
इसे राजभाषा बनाइए ।।2।।
नहीं है संघर्ष हिन्दी का किसी भी राष्ट्रभाषा से।
यह तो सरिता की तरह बह रही सदा सबको साथ ले।।
कार्यालय अध्यक्ष के नाते स्वयं पहल करें ।
केवल उपदेश न दे, स्वयं हिन्दी में काम करें ।।3।।

१८
विदाई राजभाषा प्रेमी की

लीजिए वे क्षण भी आ गए,
जिनका महीनों से था इंतजार ।
विदाई दे रहे, अपने साथी को,
तहे दिल से कर उनका सत्कार ।। 1।।
पदोन्नति पर जाने का अपार हर्ष,
पर साथ बिछुड़ जाने का दुख भी है ।
इन मिश्रित अनुभूतियों के बीच,
विदाई राजभाषा प्रेमी की हकीकत है ।। 2।।
एक-एक करके सभी साथी बिछुड़े,
ऐसे ही हमें भी जाना है ।
पर जहाँ भी रहें, राजभाषा
हिन्दी का प्रयोग बढ़ाना है ।। 3 ।।
हिन्दी प्रेम ही उन्हें, राजभाषा विभाग में खींच लाया ।
निदेशक के पद पर रह, राजभाषा नीति का ध्वज फहराया ।। 4।।
अब वे पर्यावरण भवन में जा,
हिंदीमय वातावरण बनाएँगे ।
आशा यही है इनसे,
कार्य हिंदी में, वहाँ भी बढ़ाऐंगे ।। 5।।
मुश्किलें आऐंगी इस राह में,
पर तनिक भी न घबड़ाऐंगे ।
दृढ़निश्चयी बन राजभाषा का,
पथ प्रशस्त बनाऐंगे ।। 6।।
उनके मृदुल सौभ्य स्वभाव को,
हम कभी भुला सकते नहीं ।
भले ही हमें छोड़ जायें इस भवन से,
पर दिल से कभी जा सकते नहीं ।। 7 ।।

उनके मधुर बचन,
गूँजते रहेंगे हमारे मन में ।
सतत प्रेरणा देते रहेंगे,
राजभाषा कार्यान्वयन में ।। 8 ।।

सुख समृद्धि की कामना,
करते हैं हम उनके लिए ।
उत्तरोत्तर उन्नति शिखर पर चढ़े,
प्रभु कृपा का सम्बल लिए ।। 9 ।।

उनसे यही बिनती, हमें भी,
कर लेंगे कभी याद ।
हिंदी का प्रयोग बढ़ाने की
पर्यावरण भवन में भी रखेंगे बुनियाद ।। 10।।

१९
राजभाषा प्रेम

राजभाषा नीति के कार्यान्वयन को,
जो गति दे रहे थे अभी तक,
सेवा निवृत्त हो गए ।
सरकारी सेवा से तो निवृत्त हुए,
पर हिन्दी की सेवा से तो नहीं ।।1।।

अब तो निःसंकोच पूरे मनोयोग से,
सेवा में लग जाएंगे ।
मातृभूमि, मातृभाषा, राजभाषा,
इनकी सेवा में शेष जीवन बिताएंगे ।।2।।

यही संकल्प इनका कि जब तक,
प्राण पखेरू रहेंगे इस देह में,
तन-मन-धन समर्पण कर
हिंद और हिंदी की सेवा करते रहेंगे ।।3।।

ऐसे राजभाषा प्रेमी को
हम नतमस्तक,
जिनका सर्वस्व है निछावर,
देश और देश की राजभाषा पर ।।4।।

२०
संघ की राजभाषा

संविधान में प्रावधान,
देवनागिरी लिपि में लिखी हिन्दी,
होगी संघ की राजभाषा ।
और स्वतंत्रता के पंद्रह साल बाद,
बैठेगी उस सिंहासन पर,
जिस पर पहले अंग्रेजी बैठती थी ।।1।।
पर आया अधिनियम,
निराशा बन इस प्रावधान का।
और सिंहासन तो क्या,
उसके पास तक भटकने में मजबूर है हिन्दी ।।2।।
इसकी इस दशा को,
हम कब तक देखते रहेंगे ।
कब इसे उस सिंहासन पर,
बिठाने का प्रयास करेंगे ।।3।।
हिन्दुस्तान हमारा,
हिन्दी हमारी पहचान ।
राजभाषा अपनाने में,
समझिए अपनी शान ।।4।।
यह वह भाषा जो,
जन-जन को जोड़ती है ।
लिखने पढ़ने में सरल,
अपनाने पर स्थाई छाप छोड़ती है ।।5।।
अब आज ही से अपना लें,
अपनी राजभाषा ।
देश की गरिमा बढ़ाएँ,
रखें उन्नति की प्रत्याशा ।।6।।

२१
हिन्दी कैसे आएगी

प्रेरणा प्रोत्साहन और सद्भाव से,
कुछ अपने व्यक्तिगत प्रभाव से।
जनमानस में जग रहे स्वभाव से,
हिन्दी आ रही है ।।1।।
पत्रों-फाइलों में ही नहीं शोध संस्थानों में,
आकाशवाणी, दूरदर्शन और सभागारों में।
फिल्मी दुनियां से सबके दिल-दिमागों में,
हिन्दी छा रही है ।।2।।
थोड़ी सी जरूरत है अभ्यास कराने की,
जिन्हें आती है उनसे भी प्रयोग कराने की।
संविधान-नियम, अधिनियम बताने की,
हिन्दी कार्यशाला चलाने की ।।3।।
स्वस्थ स्पर्धा जगे जब सबके मन में,
होड़ लग जाएगी तब जन-जन में।
स्वकार्य सहजता से करके, हिन्दी ला सकेंगे,
समूचे वतन में।।4।।
अब और विलम्ब न कर, आज से ही,
हिन्दी में काम करने का व्रत लें।
आइये, कुछ कर दिखाइये, यह न सोचिए कि,
हिन्दी कैसे आएगी।।5।।

२२
हिन्दी में काम

चक्र कहिए या कुचक्र,
यह कब तक चलता रहेगा ।
पहल कौन करें,
यह मसला कब तक लटका रहेगा ।।1।।

हिन्दी ऊपर से आएगी,
या नीचे से लिखना शुरू करें ।
पर तेजी तभी आ पाएगी,
जब सभी नियम-अधिनियम पालन करें ।।2।।

प्रेरणा प्रोत्साहन ऊपर से मिलें,
सद्भाव से सभी हिन्दी अपनाएँ ।
वार्षिक कार्यक्रम के लक्ष्य पूरे कर,
हिन्दी-प्रयोग निरंतर बढ़ाएँ ।।3।।

इसी तरह सजग हो,
पालन करें राजभाषा नीति ।
अविलंब हिन्दी में काम करें,
अगर करते हों देश से सच्ची प्रीति ।।4।।

चलती हुई चींटी भी,
चली जाती है बहुत दूर ।
और न चला गरुड़ भी,
पड़ा रहता है लाचार मजबूर ।।5।।

ऐसे ही धीमी गति से ही सही,
हिन्दी में काम करते चलें ।
एक न एक दिन अवश्य छा जाएगी,
पूरे देश में यह दृढ़ निश्चय रखें ।।6।।

अध्याय ४ : जल संसाधन

कैसे होगी गुजर

क्या हम भूल गए सत्तासी का सूखा और सन् अठहत्तर की बाढ़ ।
तभी तो हम टिहरी और नर्मदा सागर पर लगा रहे प्रश्न चिन्ह प्रगाढ़ ।।1।।
भूकंप का डर, पर्यावरण को खतरा, क्या पहले नहीं था ।
अमेरिका, रूस, चीन और कई देशों में भी तो था ।।2।।
पर क्या कहीं रुका बांध निर्माण का काम ।
फिर हम भारतीय ही हैं क्यों नादान ।।3।।
क्या हम उनके भुलावे में हैं, जो नहीं देख सकते देश की समृद्धि ।
प्रभु से है विनय, उन सभी को दें प्रखर सद्‌बुद्धि ।।4।।
जरा सोचिए भाखड़ा के लिए भी तो, यही आशंका करते थे ।
नेहरू जी के आश्वासनों के बाद भी, प्रश्नों की बौछार छड़ते थे ।।5।।
पर जो क्रांति लाई भाखड़ा ने, देश कभी भूल नहीं सकता ।
उसके असीम उपकार से उऋण हो ही नहीं सकता ।।6।।
जब भाखड़ा न था, हम लेते थे विदेशों से अन्न ।
पर अब हैं हम धन-धान्य से सम्पन्न ।।7।।
जरा बनने दीजिए टिहरी और सरदार सरोवर सागर को ।
लग जाएंगे चार-चांद प्रगति में, फिर न तरसेंगे पानी की गागर को ।।8।।
अगर न होंगे बड़े बांध, कैसे भरेंगे सौ करोड़ जनता का पेट ।
क्या पिलाएंगे देशवासियों को, जब मेघ लेंगे अपनी करवट समेट ।।9।।
किसी भी वर्ष जब वर्षा होगी ही कुछ दिन, कैसे होगी गुजर साल भर।
अगर न भरेंगे जल भण्डार, क्या छोड़ देंगे सभी को अपने हाल पर।।10।।
प्यारे देशवासियों इन भुलावों में न पड़, करो आत्म-चिन्तन ।
कि हम क्यों भटक रहे हैं, करो इस पर मनन ।।11।।
क्या इक्कीसवीं सदी में, किसी को प्यासा रखेंगे ।
अंधेरे में रहेंगे या भूख से, न लड़ सकेंगे ।।12।।
बांधों से नहीं बिगड़ेगा पर्यावरण, इनसे सुधरेगा जन-जन का जीवन।।13।।
संकल्प लें कि हम अब न करेंगे, गतिरोध बांध निर्माण में ।
जुट जाएंगे देश को बनाने, समृद्धशाली हर हाल में ।।14।।

२४

जीवन दाता जल

निज खेत देख सिंचित,
व्यर्थ बहा देते जलधार ।
वही कृषक अकाल में,
करते हैं हाहाकार ।।1।।
जब नहीं मिलती पानी की बूंद,
न आकाश से न नहर से ।
न बुझा पाते धरा की प्यास,
किसी भी उपाय से ।।2।।
इस नादानी, अज्ञानता को,
कौन मिटाएगा ।
सरकारी तंत्र इससे,
कब तक जूझ पाएगा ।।3।।
गांव देहात ही नहीं,
शहरों की ओर आइए ।
टपकते रिसते नलके,
एक नहीं अनेक देख जाइए ।।4।।
बूंद-बूंद से गागर भरती,
बात बड़ी पुरानी ।
पर खाली भी होती बूंद-बूंद से,
ये बात क्यों न जानी ।।5।।
तभी तो दिन रात,
बहाते रहते पानी की धाार ।
व्यर्थ ही गवां देते हैं उसे,
जो है जीव का सर्वाधार ।।6।।

क्या हम नहीं जानते,
जल ही है जीव मात्र का जीवन ।
सृजन-पालन-संहार सब जल से,
तत्व ये अनुपम सनातन ।।7।।

फिर जानकर भी,
अनदेखी क्यों कर रहे ।
जीवन दाता जल को,
इस तरहां बर्बाद क्यों कर रहे ।।8।।

ये समझ कि हमें,
मुफ्त मिल रहा ।
मीटर नहीं लगा,
तो नल चल रहा ।।9।।

पानी नहीं ये समझो,
बहता है खून किसी का ।
देते कुर्बानी निर्माण में,
ये लहू उसी का ।।10।।

जन-जन में जगाएं जागृति,
संरक्षण पावन जल की ।
तभी संभव उन्नति,
देश प्रदेश और हम सबकी ।।11।।

जल जो जीवनदाता है,
अब न करें उसका अपमान ।
सम्यक् जल उपयोग का,
छेड़ें महा अभियान ।।12।।

२५
जल महात्म्य

रोटी कपड़ा और मकान,
सब में है जल का स्थान ।।
जल बिन जीवन है सुनसान ।
जैसे कोई रेगिस्तान ।।1।।

प्रगति राष्ट्र की जल से आई ।
चहूं ओर खुशहाली छाई ।।
जल से सिंचित खेत हमारे ।
उत्पादन में सबसे न्यारे ।।2।।

पनबिजली का रूप न्यारा ।
डूबते को ज्यों दिया सहारा ।।
सबसे सस्ता प्राकृतिक साधन ।
यातायात के लिए नौवाहन ।।3।।

जल से हुए सभी निर्माण ।
दीर्घ-हस्व कुछ भी परिमाण ।।
सड़क मकान फैक्टरी सारे ।
बने हुए जल ही के सहारे ।।4।।

सैर सपाटे के सब साधन, जल ही आन संजोये ।
प्रगति देखते आज देश की, बीज इसी ने बोये ।।5।।
बस केवल इतना नहीं, और बहुत जल के कमाल ।
किया इसी ने आज देश को, धन-धान्य से मालामाल ।।6।।

२६
जल विज्ञानीय चक्र

सौर मण्डल में हमारी पृथ्वी,
ही है एक जलीय ग्रह ।
इसके तीन चौथाई में,
फैला है जल ही जल ।। 1 ।।

जल वाष्पन से बने बादल,
बहाती पवन थल की ओर ।
तभी होती है व्यापक वर्षा,
संघनन से घनघोर ।। 2 ।।

नदी-नालों से बहता हुआ जल,
जा सागर में पाता है विश्राम ।
समाता रहता है कुछ जल,
धरा में भी अविराम ।। 3 ।।

फिर यही भू-जल,
प्रकट हो कालान्तरालों में ।
जल बहाता है अनवरत,
बिन वर्षा के सरिताओं में ।। 4 ।।

दोहन कर जल नलकूपों से,
भू-जल घटता रहता है ।
नहरों की सिंचाई से,
भूजल बढ़ता रहता है ।। 5 ।।

नदी जल, भू-जल है,
दोनों एक ही रूप ।
जैसे सगुण-निर्गुण,
ब्रह्म के ही स्वरूप ।। 6 ।।

वाष्प से जल, जल से बर्फ, बर्फ से जल,
जल से वाष्प बनता रहता है ।
प्रकृति का यह जल-विज्ञानीय चक्र,
अविराम चलता रहता है ।। 7 ।।

अध्याय ५ : तन-मन का स्वास्थ्य

आरोग्य मंदिर जाइए

महाभारत का प्रसंग,
दौप्रदी का चीरहरण,
दयनीय दशा में उसने,
एक एक करके पाँचों पतियों को देखा।
उन्होंने भी लाचार आँखों से मुँह फेरा।।1।।

इस बीच श्रीकृष्ण ने,
जो भोजन कर रहे थे द्वारिका में।
हाथ का ग्रास रोक अफसोस किया ।।2।।

रूकमिणी बोली नाथ !
क्या बात है ! कोई कष्ट परेशानी !
प्रभु बोले ! मेरा भक्त कष्ट में है,
फिर आप यहां क्या कर रहे,
जाते क्यों नहीं ।।3।।

कृष्ण बोले प्रिये ! मैं क्या करूं,
वह तो मुझे बुला ही नहीं रहा ।
वह तो देखता है उनकी ओर,
जो कुछ कर नहीं सकते ।।4।।

इसी बीच निरीह द्रौपदी,
पांच पतियों से निराश हो,
प्रभु को पुकारने लगी ।
श्रीकृष्ण तुरंत प्रकटे चीर रूप में,
और लाज रखी द्रौपदी की ।।5।।

ऐसे ही आज असंख्य जन,
पाँच नहीं अनेक चिकित्सा प्रणालियों से,
अपने जीर्ण रोग मिटाने के असफ़ल प्रयास करते ।
और जब हार थकते, तब आरोग्य मंदिर जाते ।।6।।

प्रकृति की गोद पा वहां,
सभी दुख दर्द भूल,
नया जीवन पा, रोगों को जड़ से मिटा,
भविष्य के लिए दृढ़ संकल्प ले।
सानंद अपने घर लौट आते ।।7।।

यदि आप या आपके पड़ौसी को,
हो कोई असाध्य जीर्ण रोग,
तो और विलंब न कर,
फौरन आरोग्य मंदिर जाइए ।।8।।

२८
ऐसी किश्मत

चली बूँद बादल से गिरेगी कहाँ ।
क्या पता था उसे कि जाऊँगी वहाँ ।।1।।
उसे डर था कि कहीं धूल में न मिल जाऊँ ।
या फिर बीच से ही वाष्प बन कर लौट आऊँ ।।2।।
चाहती थी कि पडूं पपीहा के कंठ में,
जो हरदम कराहता उसकी चाह में ।
न जानें होंगीं कितनी मुश्किले,
इस दिशा में उसकी राह में ।।3।।
ऐसी ही रहस्यमय है एक बालक की कहानी ।
जो अब तक रही शायद सबसे अनजानी ।।4।।
छोटे से गाँव में जन्में, जहाँ खेती ही मुख्य काम था ।
पढ़ाई लिखाई नामुमकिन, स्कूल दो कोस दूर था ।।5।।
किस्मत ने दिया साथ, कि गाँव में स्कूल खुल गया ।
पर प्राइमरी पास करके, अध्ययन बंद हो गया ।।6।।
छटवीं की थी फीस माफ उत्तर प्रदेश में ।
सो वह कक्षा पार हुई ग्रामवासियों के साथ में ।।7।।
वहाँ पढ़ाई थी बंद होने के कगार पर।
फिर आ गए मध्य प्रदेश के द्वार पर ।।8।।
उच्चतर माध्यमिक करके था इरादा मास्टरी का ।
पर प्रभु कृपा से हो गया डिप्लोमा इंजीनियरी का ।।9।।
संभाले पद कनिष्ट अभियंता, डिग्री कर ली तीन साल में ।
चयनित हो सहायक निदेशक, आए केन्द्रीय जल आयोग में ।।10।।
न बूँद को मालूम था कि क्या होगा अन्जाम ।
और न बालक को पता था कि कहाँ होगी शाम ।।11।।
पर प्रभु कृपा, लगन-मेहनत का करश्मिा ।
मंजिल वो मिली, न थी जिसकी कभी कल्पना ।।12।।
बूँद भी गिरी सीप में बनी मोती ।
ऐसी किश्मत भी किसी-किसी की होती ।।13।।

२९
दिल्ली का जीवन

ना ही किसी को भूल गए है, ना ही बुरा मनाते हैं ।
दिल्ली का जीवन ऐसा है, फुर्सत नहिं पल की पाते हैं ।।1।।
चिट्ठी लिखते चलती बस में, बस खड़े-खड़े खा पाते हैं।
और अगर हो गया समय, तो छोड़ नाश्ता जाते हैं ।।2।।
रात्रि में भोजन करते ही, हो जाता है विचार मंथन ।
कुछ कर पाने का समय कहाँ, जाते बिस्तर पर करें शयन ।।3।।
छुट्टी मिलना मुश्किल होती, मिलने पर जाना और कठिन।
जाते नहिं पास तुम्हारे हम, फिर भी जाता रहता है मन ।।4।।
अब जल्दी ही आएंगे, हम मौके की तलाश में हैं ।
देखत में दूर सभी से हैं, पर दिल से सदा पास ही है ।।5।।
समाचार मिलते रहते, संतोष इसी से होता है ।
चिंता करना भी व्यर्थ ही है, जो होना वह तो होता है ।।6।।
कर्म हमारे हाथों में, उससे ना पीछे हटें कभी ।
सब प्रभु का प्रभु को अर्पण कर, मंगलमय हो जाएं सभी ।।7।।

दोहा:- दुख चिंता सब छोड़कर, रहो प्रभू की आस ।
दिल्ली या नौगांव हो, दिल से हरदम पास ।।8।।

३०
न करते न करने देते

शीघ्र निर्णय प्रशंसनीय, पर धोखा न खा जाना।
द्रुतगामी रखो चाल, पर कही गिर न जाना।।1।।
जीवन में करने पड़ते, बहु प्रपंची विविध काम।
हर पल ये ध्यान रखें, कि क्या होगा उनका अंजाम।।2।।
इस हेतु दी विचार शक्ति, प्रभु ने हमें असीम।
उसका उपयोग जो न करते, बने रहते नीम हकीम।।3।।
कुछ लोग सोचते, हमें क्या करना अब तो जाना है।
मेरी सेवा निवृत्ति नजदीक, कुछ समय ही तो बिताना है।।4।।
नेमी काम ही निपटाकर, समय गुजार देते।
बहुत कुछ कर सकते, पर न करते न करने देते।।5।।
अस्सी वर्ष का बूढ़ा, माली आम लगा रहा।
राहगीर ने पूंछा, वह यह क्या कर रहा।।6।।
तुम मरने वाले हो, आम कब खाओगे।
पौधा पेड़ बने, इससे पहले तुम चले जाओगे।।7।।
माली का क्या उत्तर, हम सभी हैं जानते।
पर जानते हुए भी, बहुत कम हैं जो मानते।।8।।
सेवा निवृत्ति क्या, एक दिन इस जग से भी है जाना ।
सोच ये प्रमाद त्याग, सत्कार्य करो कि फिर न पड़े पछताना ।।9।।

३१
नववर्ष हो मंगलमय

नव वर्ष हो मंगलमय सबको,
सबका हित हो सब सुखी रहें ।
सद्‍ग्रन्थ पढ़े-सत्कर्म करें,
सन्मार्ग चले-सब कष्ट हरें ।।1।।
बाहर-भीतर के झगड़ों में,
हम मानवता को ना भूलें ।
अपने सौम्य आचरण से,
आध्यात्म की सीमा को छू लें ।।2।।
बसुधैव कुटुंब का नारा ले,
सुख-चैन धरा पर बरसा दें ।
सत्य अहिंसा पथ प्रशस्त,
चलकर खुशहाली फिर ला दें ।।3।।
धनुधारी 'राम' से विनती ये,
अब आर्तजनों की पीर हरें ।
भक्तों के दुःख तो दूर करे,
पतितों का भी उद्धार करें ।।4।।

दोहा- नित प्रति पूरे वर्ष में, छाए खुशी अपार ।
यही कमना 'दास' की, घर-घर मंगलाचार ।।5।।

३२
मंगलमय नव वर्ष

मंगलमय नव वर्ष हो, सुख समृद्धि लाए।
प्रेम-सद्भाव, सुखशान्ति की, सरिता बहाए।।1।।
आयकर सीमा बढ़े, वेतन भोगियों को राहत मिले।
वर्षों से अटके मसले, निपटाने का सिलसिला जमे।।2।।
घटे सुविधा शुल्क सीमा, जन-जन की विपदा दूर हो ।
ये देश था सोने की चिड़िया कभी, फिर वही नाम मशहूर हो।।3।।
आतंकवादी न उठाएं सिर, अगर उठाएं तो कुचल देंगे।
बहुत झेला उनको, अब ठिकाने लगा ही देंगे।।4।।
संकल्प ये करें कि हम, सब मिल-जुलकर रहेंगे।
आतंक और आतंकवादियों को, नष्ट करके ही दम लेंगे।।5।।
हम सभी हैं शान्ति प्रिय, भाई चारा चाहते।
पड़ौसी देशवासियों को, गले लगाना चाहते।।6।।
नव वर्ष में हम, पिछले गम भुला देंगे।
पश्चाताप से जो निखरा, उसे अपना लेंगे।।7।।
पर फिर भी जो शैतान, हरकतों से वा़ज न आयेंगे।
उन्हें आज नहीं तो कल, सबक जरूर सिखाऐंगे।।8।।

३३
यादें छोड़ चले

दो चार दिन हो या दो वर्ष
जिसके साथ रहें,
संस्कार पड़ ही जाते हैं ।
हमें पता चले न चले,
पर कुछ न कुछ,
यादें छोड़ चले जाते हैं ।।1।।
साथ रहे चार वर्ष,
फिर कभी मिलें न मिलें,
पर याद आते रहेंगे ।
जो भी यहाँ आते,
मिलते और बिछुड़ते,
ऐसे ही जाते रहेंगे ।।2।।
ये जग दो चार दिन का,
दो चार वर्ष - शताब्दी का,
पर हाल यही जो यहाँ हुआ ।
साथ क्या ले जाना, ये पता नहीं,
फिर क्यों न देते सबको दुआ ।।3।।
हम जानते कि कलियुग में,
और कुछ साधान सुलभ नहीं,
फिर क्यों प्रभु नाम न भजते ।
माया से छूटने यहाँ आए,
पर लिपटते ही जा रहे,
भव पार जाने की कोशिश क्यों न करते।।4।।

३४
विजय अपने आप पर

हाथ डालेंगे आग में,
तो जल जाएगा ।
वर्फ पीस रखें धूप में,
तो पिघल जाएगा ।।1।।

अनुभव ये बड़ों के,
जो ध्यान में रखेंगे ।
तो कभी हम न ऐसी,
मुसीबत में फंसेंगे ।।2।।

फिर भी हम आग में,
क्यों हाथ डालते ।
बार बार जलने पर भी,
हम क्यों नहीं मानते ।।3।।

यही तो है संस्कारों की दैन ।
जो नचाते कठपुतली सा हमें दिन रैन ।।4।।

अब कुछ न कुछ करना ही होगा,
बनाने को शुभ संस्कार ।।
कि जिससे हो जाए,
समय रहते भवसागर से बेड़ा पार ।।5।।

यदि यह न किया तो कुछ नहीं,
चाहे पहुँच जाएँ चाँद सितारों पर ।
जीत सब जग को न होगा कुछ,
जो विजय न पा सके अपने आप पर ।।6।।

३५
विश्राम की कौन कहे!

स्कूटर, कार हो या साइकिल,
हम रख-रखाव का कितना ध्यान रखते!

टू टी ऑयल साथ ले जाकर,
पेट्रोल में खुद मिलाते,
कि कहीं स्पार्क प्लग में, कार्बन न जम जाए।।1।।

पर हम अपने ही पेट में,
न जाने क्या-क्या किस अनुपात में,
कब-कब डालते रहते हैं!

भूख होने, न होने की बात क्या कभी सोचते?
हां, सोच-सोचकर व्यर्थ की बातें,
पेट खराब जरूर कर लेते,
और पहुंच जाते उस दोराहे पर,
जहां से प्रकृति ही बचा सकती।।2।।

उचित आहार-विहार,
भोजन, विश्राम की बात
करते बहुत हैं,
पर कितने निभा पाते ?

विश्राम करने जा ही रहे थे,
कि फोन आ गया,
काम नहीं होगा, आना पड़ेगा,
और चल दिए विश्राम को ताक पर रखकर ।।3।।

क्या ऐसे में कोई स्वस्थ रह सकता,
कि जहां समय ही नहीं हैं, किसी को विश्राम का ?
'आरोग्य मंदिर' वाले कहते हैं-
'भोजन के बाद एक घंटा विश्राम करें।'
यहां चैन से भोजन करने का ही समय नहीं,
विश्राम की कौन कहे।।4।।
क्या बिना पेट्रोल-डीजल-शक्ति के,
चल सकेंगी गांड़ियां ?
फिर इस प्रकृति की अनुपम कृति को
समुचित भोजन-विश्राम के बिना,
कब तक घसीटते रहेंगे ।।5।।
क्या इसी विभाषिका का,
परिणाम नहीं हैं बहुसंख्यक बीमारियां?
अब भी समय है,
यदि खान-पान पर कर सकें नियंत्रण,
सुबह-शाम स्वच्छ हवा में टहल प्राणायम कर,
कर सकें कुछ आत्म-चिंतन ।।6।।

३६
सच-सच बता दें

हरिश्चंद्र तो बन नहीं सकते,
पर झूठ भी तो न बोलिए।
खासकर ऐसा कि जिससे,
किसी का अहित हो जाए।।1।।
किसी का हक छीनने,
अपना स्वार्थ सिद्ध करने,
या फिर दुखी को और दुखी करने,
कम से कम इसके लिए,
तो झूठ न बोलिए ।।2।।
जब कोई अपनी ही उलझनों से हो परेशान,
और उसे फोन पर फोन आएं,
तो क्या वह यह भी झूठ न बुलवाए,
कि वे घर पर नहीं है।।3।।
क्या इसे परिष्कृत कर दें,
कि अभी हैं नहीं, एक घंटे बाद करें;
पर यह भी तो झूठ ही है,
सान्द्रता कुछ भी हो ।।4।।
दफ्तर हो या घर,
जब सुबह से शाम तक,
रहेगी भरमार दूरभाष की।
तो कोई सज्जन बेचारा,
और क्या करेगा।।5।।

जरा सोचें फोन क्यों आते हैं,
किससे और किसलिए आते हैं,
किसी मंत्री या अफसर को,
नौकरी, धंधे या काम से।
या फिर व्यापारी वर्ग को,
अपने ही काम से।।6।।

जब अपने मतलब की होती बात,
हम घर पर होते हैं।
और जब परमार्थ की बारी आती,
घर से बाहर कहे जाते हैं।।7।।

जरा-जरा सी बात पर,
हम क्यों झूठ बोलते।
बस इसलिए कि हम,
झूठ को झूठ ही नहीं समझते ।।8।।

पर झूठ-झूठ ही है,
वह सच कभी हो नहीं सकता।
सांप को कितना ही पिलादें दूध,
विष छोड़ नहीं सकता।।9।।

तो फिर क्यों न सच-सच बता दें,
कि अभी हैं थोड़ी देर में करेंगे आप से बात।
क्षमा करें अन्यथा न लें,
इसके लिए उन्हें भी है पश्चाताप।।10।।

अध्याय ६ : समाज सुधार
ईश्वर ही बचाएगा

गर्मियों में आठ और सर्दियों में छः बजे,
गॉव देहात में करते सो जाने की तैयारी,
वहीं शहरों में जहॉं बिजली की चमक दमक,
दिन रात ही हैं एक समान।
दिन में कम यहॉं रात में ही,
होते बहुतेरे काम।।1।।

दयनीय दशा उनकी,
जो फंसे दोनों के बीच,
जहॉं बिजली के तार तो हैं,
पर बिजली नदारत,
और ऑंख मिचौनी होती,
बिजली की बीसियों बार ।।2।।

दिल्ली के प्रदूषण से भागे,
नोएडा में घर बनाया।
पर बिजली की किल्लत से,
यहॉं भी चैन न पाया।।3।।

जिनकी जेब गर्म वे रह सकते,
जेनरेटर-इनवर्टर के सहारे ।
पर आम आदमी ही बेचारे,
फिरते हैं मारे-मारे।
दिन भर तो पसीना बहाते हैं,
रात में भी बहाएगे।
बिजली आ गई अगर तो,
चैन की नींद सो पाएगे।।4।।

नहीं तो मच्छरों को कर आत्म समर्पण,
छत या सड़क पर लेट जाएगे।।
बड़े शहरों को बड़ा कर रहे।
औद्योगिक नगरी के नाम पर पैसा बटोर रहे।।5।।

चिन्ता क्या किसी को, बिजली मिले न मिले।
पर लाइन मैन की जेब जरूर गर्म होती रहे।।6।।

चोरी बिजली की जितनी होती, शायद ही किसी और की हो,
जहॉं रक्षक ही भक्षक बने बैठे, उसे कौन बचा पाएगा।
क्या होगा अन्जाम, यह तो समय ही बताएगा।
समस्या हैं गंभीर, अब तो ईश्वर ही बचाएगा।।7।।

३८
क्या कभी कोई पार पाएगा

सुबह हो या शाम, घड़ी की सुई पर नज़र रखते।
और यदि कहीं छूट गई चार्टड, तो फिर डी टी सी में ही लटकते।।
बड़े शहरों की इतनी ही नहीं बिडम्बना, कदम कदम पर खतरों से जूझते।
जब पुल पर होता चक्का जाम, चंद मिनट ही नहीं घंटे यों ही गुजरते।।1।।
यह भी संयोग ही है, देर पर देर होती।
दफ्तर भी तो ऐसी जगह, कि जहां एक भी बस सीधी नहीं पहुंचती।।
एक बस से उतरकर, दूसरी की ताक में रहते।
पर देर होती देख, तिपहिये स्कूटर को खोजते।।2।।
जब नहीं होती जरूरत, बहुतेरे खड़े रहते।
वक्त पड़ने पर, कोई नज़र नहीं आते।।
भूला भटका कोई आ गया, तो जाएगा नहीं।
नजदीक जाने को कोई राजी नहीं।।3।।
किस-किसका नंबर नोट करके, शिकायत करेंगे।
यही सोच रह जाते जो जैसा करेंगे वैसा भरेंगे।।
शाम को भी यही नजारा, छः-पांच का समय, पर छः बजे ही चल देते।
कोई आए या न आए, परवाह नहीं करते ।।4।।
इन मुश्किलों की तह में, क्या कोई जाएगा ।
आज नहीं तो कल, क्या कभी कोई पार पाएगा ।।5।।

३९
किसे वोट दें

दुखियों के दुख-दर्द वे क्या जाने,
जिन्होंने दुख-दर्द कभी देखा ही नहीं।
जिन्हें कांटा कभी चुभा ही नहीं,
उसकी पीर वे क्या जानें।।1।।
कुर्सी पर बैठकर उसी की,
रक्षा हेतु होते सभी यत्न।
जनहित के लिए कौन करेगा प्रयत्न।।2।।
जब फुर्सत ही मिलनी नहीं पार्टी के काम से,
आज यहां, कल वहां, जहां भी रहें रहना है आराम से।
इतना ही नहीं नजर रखते हैं अपनी कुर्सी पर,
बेच सकते हैं सब कुछ उसे बचाने को,
ईमान धर्म तो कोई चीज ही नहीं।।3।।
फिर हम किसे वोट दें किसे जिताएं।
केन्द्र हो या राज्य, सवाल यही कि
किस पार्टी को लाएं।
एक-एक करके टोह ले ली सभी की,
कोई उन्नीस तो कोई बीस।।4।।
फिर क्या वोट न दें,
नहीं, यह तो है हकीकत से पलायन।
कर्तव्य विमुखता, जैसे रण छोड़ कायरपन,
यही नेक सलाह, कि किसी के बहकावे में न आ,
करे वही जो दिल दे गवाही,
उन्हें बोट दें जिनमें अभी भी कुछ
बची है निष्ठा देश के लिए,
और देश की बहुरंगी फुलवाड़ी के लिए।।5।।

४०

गाँधी जी का सपना

बाल शिक्षा पर है ध्यान सरकार का,
स्वयं सेवी संस्थाओं और जनता का,
फिर भी क्यों वह बच्ची,
जिसे स्कूल में होना चाहिए,
आज मूंगफली बेचती है।।1।।

स्वतंत्रता की स्वर्ण जयंती मना ली,
बड़ी-बड़ी घोषणाएँ हो गईं,
उद्‌घाटन हुए स्तर सुधारने के,
पर गरीब और गरीब होता जा रहा,
क्या ध्यान गया इस पर किसी का।।2।।

कैसे दूर होगी ये विषमता,
और कब तक पटेगी,
अमीरी-गरीबी की खाई।
क्या है इस हेतु किसी के पास सम्यक् योजना,
हाँ योजनाएँ तो बहुत बनी हैं, बनतीं रहेंगी,
पर वे धरातल पर कब उतरेंगी,
कोई नहीं जानता।।3।।

पर जिन्हें है गरीबी का अहसास,
वे क्या भूमिका निभाएँ गरीबी उन्मूलन में,
यह प्रश्न बहुतों के दिल-दिमाग में घर किए है,
इसका एकमात्र उत्तर यही,
कि हम अपना कर्तव्य पथ स्वयं निश्चित करें,
और उस पर दृढ़ता से चलें।।4।।

ध्यान रखें यही कि किस तरह हम,
कम से कम एक गरीब की नि:स्वार्थ सेवा कर सकें ।
यदि गरीबों के उत्थान का जिम्मा,
केवल एक बड़ा अमीर ही ले ले,
तो एक दशक में गरीबी उठ जाएगी।।5।।

पर इस गरीबी को शायद वे अमीर,
खत्म नहीं करना चाहेंगे,
जो गरीबी का फायदा उठाकर अमीरी भोग रहे हैं।।6।।

और एक उपाय गरीबी उन्मूलन का,
सच्ची ईमानदारी का,
वह यह कि हम सभी सच्चे मन से, तन्मयता से।
अपने कर्तव्य पथ पर अग्रसित हों,
तो एक न एक दिन गरीबी,
जड़ से उखड़ जाएगी,
तभी होगा गाँधी जी का सपना पूरा,
और आएगा सही मायने में राम राज्य।।7।।

४१
गांव की ओर

बड़े शहरों को ही बड़ा करते जाएंगे कब तक,
क्या कभी देखेंगे भी गांव की ओर।
जब रोजी रोटी न मिलेगी गांव में,
भागेंगे वेचारे शहर की ही ओर।। 1 ।।
फैक्टरी उद्योग-धंधे क्या,
गांव में नहीं लग सकते ।
फिर क्यों घने शहरों को हम
और घना करने में नहीं हिचकते।। 2 ।।
एक मजदूर साईकिल पर गया,
अपनी रोजी की तलाश में ।
क्या पता था उसे कि लोग,
कुछ ही क्षणों में ढूंढेगें, उसका पता, उसकी लाश में ।। 3 ।।
बदतर क्यों होती जा रही,
शहर की जिन्दगी,
कब तक नहीं सोचेंगे हम,
इस हादसा की तह में।
बड़े शहरों में है मोटर गाड़ियों की बाढ़,
वही सुनसान गलियां पड़ी
गांव-देहात में।। 4 ।।
स्वतन्त्र हुए भी तो
हो चुके हैं पचास साल,
फिर भी गांव के हाल
अभी तक क्यों बने हैं बेहाल ।। 5 ।।
अभी भी बरसात में घुटनों तक धंसते कीचड़ में,
चलना पड़ता है बीसियों मील ।
घने अन्धकार में रह कर,
लोटा भर पानी को तरसते और होते जलील।। 6 ।।

यदि न उठाएंगें कड़े कदम,
सुधारने को दशा गांव-देहात की
क्या हिम्मत जुटा पाएंगे,
बोट लेने वाली मुलाकात की ।। 7 ।।
ये सच कि योजनाएं बनी बहुत अच्छी,
पर कितनी धारा पर उतरी, किसी ने सोचा ।
जहां रक्षक ही भक्षक बने बैठे,
क्या किसी ने देखा।। 8 ।।
इन भक्षकों, राक्षसों का कौन करेगा अन्त,
क्या ये जीते रहेंगे जीवन पर्यन्त।।
गांव की दशा सुधारने को,
बदलना होगा इन हैवानों को ।
तभी कामयाब हो सकेंगी योजनाएं,
और ला सकेंगे सुख-चैन इन्सानों में ।। 9 ।।
विधेयक तो आ रहा है, लोकपाल के लिए,
पर क्या काबू कर पाएं हैं, हम लेखपाल पर भी ।।
किस तरहां करते वे घोटाला,
और चूसते खून गरीबों का ।
अन्दाज है किसी को, हां उसी को
जो है भुक्त भोगी।। 11 ।।
आशा ही रख सकते
कि कभी तो हमारा करुण क्रन्दन,
पहुंचेगा सत्ता के कान में ।
धैर्य रखते हैं, समझ ऐसा,
करके विश्वास भगवान में।। 12 ।।

४२
मामला बिजली पानी का

सन् तिरासी का प्रसंग,
हम कैलीफोर्निया यूनिवर्सिटी गए,
स्वागती महिला से जरूरत का सामान जारी कराया,
उसमें थी एक विद्युत चालित घड़ी।।1।।
उसे हाथ में ले मैंने उस महिला से पूछा,
बिजली चली जाएगी तब यह कैसे चलेगी,
और घड़ी बंद हो जाएगी,
तो सुबह कैसे उठेंगे ।।2।।
उसने मुझे उपर से नीचे तक देखा,
मुस्कराई और बोली,
किस देश से आये हो,
मैंने कहा भारत।।3।।
वह बोली यह भारत नहीं अमेरिका है,
यहां बिजली पल भर को भी न जाए।।
यह बात सच निकली,
क्योंकि तीन माह बाद भी घड़ी में समय सही था।।4।।
ऐसे ही एक बार वहां,
पाइप लाइन साफ होनी थी,
सप्ताह पहले विज्ञापन छपा,
दो दिन पहले नोटिस चिपका,
और उसी दिन फोन भी आया,
कि आज दस से बारह तक पानी बंद रहेगा ।।5।।
जब अपने देश की हालत देखते,
तो तरस आता,
यहां दो घंटे पानी आ जाए
और केवल दो घंटे बिजली जाए,
तो गनीमत समझिए।।6।।

इसके लिए सरकार क्या
हम सभी हैं जिम्मेदार।
बिजली हो या पानी,
उत्पादन कम और
दुरुपयोग होता अधिक,
वितरण में भी कितनी विषमता,
कि सुनसान जगह में मर्करी बल्ब जलते।।7।।
वही दूसरी ओर ग्रामवासी,
अंधेरे में गर्मी में तड़पते।।
जिन गांवों में हैं बिजली,
उनका भी बुरा हाल।।8।।
कनैक्शन सीधा खंभे से ले,
बिजली का दुरुपयोग करते,
लाइन मैन की हिम्मत क्या,
जो उनसे पूंछ सके,
वे भी अपना हफ्ता ले चुप रह जाते,
और चूना बिजली बोर्ड को लगाते।।9।।
इस कुव्यवस्था को सुधारने,
करें जन जन का आवाहन।
जुट जाएं सभी तो पा सकेंगे,
अपनी खोई कीर्ति पुरातन।।10।।

४३
श्रद्धांजलि दिवंगत नेता को

प्यारे देशवासियो जरा सोचो,
हम क्या कर रहे।
नफरत द्वेष हिंसा के बीज,
क्यों बो रहे।।1।।

क्या इसी का नहीं है नतीजा,
श्री राजीव गांधी की हत्या,
जरा दिल से पूँछे,
क्या ये नहीं है लोकतंत्र की हत्या।।2।।

कटुता के दल दल में,
कब तक फंसे रहेंगे,
अपनों को अपने ही इस तरहॉं,
कब तक काटते रहेंगे।।3।।

साजिश है उनकी जो देश को,
नहीं देख सकते समृद्ध।
हम सभी को मिलकर,
ये करना होगा संकल्प,
अब इस तरहां न मरने देंगे,
भारत मां के सपूतों को।।4।।

प्रेम, शान्ति पर दृढ़ निश्चय से,
कुचल डालेंगे उन कपूतों को,
जो देश को रसातल में ले जा रहे।
और अपने तुच्छ स्वार्थ के लिए
भाई-भाई में कटुता फैला रहे।।5।।

ये संताप, गम चंद दिनों का नहीं,
जो सितारा टूट गया वो जुड़ता नहीं।
अब भी वक्त है सम्हल जाने का,
जाति धर्म भेदभाव छोड, एक हो जाने का।।6।।

याद करो उन कुरबानियों को,
जिन्होंने कराया आजाद देश को,
बिखरने से बचा लो,
देश और देश के कर्णधारों को ।।7।।

दुख की इस घड़ी में लो धैर्य से काम,
जल्दीबाजी, क्रोध वैर का होता है बुरा अंजाम।
करें यही यत्न कि आये, देश में अमन चैन फिर एक बार,
यही सच्ची श्रद्धांजलि दिवंगत नेता को,
कर दिखाओ, यदि करते उनसे प्यार ।।8।।

४४
ससुर जी कहाँ जाएँ

दो तीन दसकों में जमाना कितना बदल गया,
नए नए सीरियल क्या आए, सोने का समय ही बदल गया।
दस बजे विस्तर पर जा, सुवह चार बजे छोड़ देते।
भरपूर नींद पा दिनभर सब काम करते और प्रसन्न रहते।।1।।
आज तो दस बजे ही, घर घर की कहानी,
और साढ़े दस बजे, सास भी कभी बहू थी,
सीरियल शुरू होते हैं।
इन्हें सभी देखते, फिर कैसे सो सकते।।2।।
दुष्परिणाम यह कि सुवह जल्दी उठ नहीं सकते,
दफ्तर जाने का समय निश्चित,
फिर कैसे क्या करेंगे।
बस यही कि योगासन - टहलने में,
कटौती करेंगे।।3।।
इस सास बहू के फेर में,
बेचारे ससुर जी कहॉ जाए।
कि जहॉ चैन की नींद पा,
सुवह जल्दी जग जाए।।4।।
न सीरियल का समय बदलेगा,
न बदलेगे देखने बाले।
अब तो ससुर जी को ही,
बदलना होगा, अपने सोने का समय,
दस की जगह ग्यारह और चार की जगह सुवह पॉच छः।।5।।

नई पीढ़ी तो देर से सोने देर से जागने में,
करती विश्वास।
उससे ही एडजस्ट करके,
चलना होगा और न कोई राह।।
करें इस पर चिंतन, कि हम क्या करें।।6।
रोशनी हो या शोरगुल, सोने का अभ्यास करें ।।6।।
तभी उठ सकेंगे ब्रह्म मुहूर्त में,
कर सकेंगे निर्वाध सभी काम ।
इह लोक और परलोक सुधार सकेंगे,
मिल सकेगा मन को परम विश्राम ।।7।।

अध्याय ७ : मानवता
अबला की करुण कहानी

फिल्म नाटकों और सीरियलों में,
देखी सुनी जो गाथाएँ।
चरितार्थ होते भी देखीं,
जैसे एक अवला की करुण व्यथाएँ।।1।।

पति को देवता मान उसे,
लिपिक से आई ए एस बनाया ।
बदले में बेचारी ने,
उससे तलाक पाया।।2।।

बच्चों का पालन पोषण कर,
जीवन को कैसे चलाया।
हम नहीं जान सकते उस दर्द को,
वही जाने जिसने वो दर्द पाया।।3।।

मानव जब दानव बन जाता,
पराकाष्टा उसकी न कोई जानें।
पर भोगना सब पड़ता यहीं,
कोई मानें या न मानें।।4।।

वही अधिकारी एक घोटाले में,
फौरन किया गया मौत्तिल।
नई बीबी ने भी अब उससे,
जबरन ले लिया तलाक।।5।।

यही अधिकारी जिसने छोड़ा था,
एक निरीह अवला को असहाय।
आज स्वयं दर दर की ठोकर खा,
तड़प रहा अपने कुकर्मों का फल पाय।।6।।

दुख दर्द जो देता किसी को,
उसे सुख मिल नहीं सकता।
रवि प्रकाश के बिना ज्यों,
अंधकार मिट नहीं सकता ।।7।।

सीख लें इस गाथा से,
कि अब किसी का दिल न दुखाऐंगे।
अहसानों का बदला चुका,
सदा अपना फर्ज निवाहेंगे।।8।।

४६
गरीबी-अमीरी की खाई

दो सौ वर्ग गज में भी बनवाकर मकान,
हम सोचते हैं,
काश,
इससे बड़े साइज का प्लाट लिया होता ।।1।।
क्या हमारी नजर नहीं पड़ती,
उन झोंपड़ियां पर,
जो हैं,
हमारे स्नानागार से भी छोटी ।।2।।
रात में हुई बरसात,
पड़ी ठंडी बौछारों,
कैसे बचाया होगा उन्होंने,
अपने नन्हें-मुन्नों को,
ओलों से,
जब हम सभी सो रहे थे गहरी नींद में ।।3।।
क्या वे मानव नहीं,
उनका देश में कुछ हक नहीं,
फिर क्यों,
इस कष्टमय जीवन में, उन्हें देखते रहते,
देखकर भी,
कुछ कर सकने की क्या कभी हम सोचते ।।4।।
सुंदर सफेदी कराके भी,
हम सोचते है,
काश फेसिंग में धौलपुर लगाया होता ।।5।।
क्या हम चीथड़ों से ढकी,
दरिद्रता की मूर्ति, झोंपड़ी नहीं देखते,
इसे देखकर भी क्या,
हम सोचते रहेगें धौलपुर लगाने की बात ।।6।।

हमारे पास जो है,
बहुत कुछ है,
यदि नजर डालें असंख्य गरीबों पर,
उनका क्या दोष,
बस यही, कि वे अपने हक के लिए नही लड़तें ।।7।।
हम भी तो लड़ाई बहुत करते,
भूख से करते आए और पहुंच गए खाड़ी युद्ध तक,
पर गरीबी हटाने की लड़ाई कौन लड़ेगा,
ये नेता लोग, अफसर, समाज सेवी,
या और कोई बेनाम का ।।8।।
पर सभी में आती,
कहीं न कहीं से स्वार्थ की गंध,
नहीं तो गरीबी कब की उठ गई होती,
उसका तो विकास हो रहा,
स्लम विभाग बनने पर भी स्लम बढ़ रहे ।।9।।
क्यों न बढ़ें,
जब उन्हें गांव में रोजी-रोटी न दे सकेगें,
बेचारे आएंगे शहरों में,
और बिताएंगें नारकीय जीवन,
पाने को रोटी दो जून की ।।10।।
अमीरी-गरीबी की खाई, कौन पाट सकता,
पाटेगें भी क्यों,
पाटेंगे, तो अमीरी का अस्तित्व कहाँ रहेगा।
गरीबी है एक अभिशाप,
वही जानता,
जिस पर आप बीती हो कभी ।।11।।

जितने अमीर दिखाई देते,
अमीरी के नशे में,
उन्होंने या उनके बाप-दादओं ने,
चूसा होगा,
कभी न कभी खून गरीब का ।।12।।

सरकार लेती कर, इस मिटाने,
पर किससे,
उसी से, जो दे भी नहीं सकता,
हम कमाते महीने भर में जितना,
और देते एक चौथाई टैक्स में,
क्या कोई उनसे ले सकता,
जो कमाते उतना एक दिन में ।।13।।

हॉं, सरकार ने खड़ी की,
सत्ताईस बटालियन इसके लिए,
पर क्या,
उससे भी बड़ी बटालियन, नहीं हैं, कर चुराने वालों की।।14।।

फिर क्या कुछ कर सकेगें हम,
हां, यही,
कि जगाएं सबके मन में भावना परोपकार की,
यही एक साधन,
यही एक इलाज इस रोग का ।।15।।

जगाएं सबके मन में ये भाव,
कि जो दर्द हमें होता है,
वही दर्द उन्हें भी होता,
जो पड़े हैं झोपड़ी में ।।16।।

४७
गरीबी की रेखा

मोटर-कार में चलने वाले,
कभी डी.टी.सी. में चल कर देखें।
और आलीशान बंगलों में रहने वाले,
कभी झोपड़ी में रुक कर देखें।।1।।

तो शायद उनका भी दिल पसीज जाए,
कुछ करने को उनके लिए,
जो ये दुख-दर्द सदियों से झेल रहे।।2।।

गरीबों की हालत सीरियल में ही देखकर,
आँखे गीलीं हो जातीं।
हकीकत में देखेंगे, तो पानी पानी हो जाएंगे।।3।।

पर कब से देख-सुन रहा है सारा जग,
करुण क्रंदन गरीबों का।
फर्क उन्हें पड़ता नहीं,
जो हैं गरीबी रेखा से ऊपर।।4।।

गरीबों को ऊपर उठाने की बातें तो बहुत होती,
पर उनको उठाता कोई विरला ही।।5।।

पर हाँ गरीब उठे न उठें,
गरीबी की रेखा उठती जा रही।।
और चपेट में ले रही मध्यवर्ग को,
अपने में आत्मसात करने।।6।।

लगता है सिर्फ दो वर्ग ही रहेंगे,
गरीब और अमीर
यदि फिर भी बच गया मध्य वर्ग तो,
दोनों पाटों के बीच पिसता रहेगा।।7।।

न नीचे जा सकेगा, न ऊपर उठ सकेगा।
बेचारा त्रिशंकु बन लटकता ही रहेगा।।8।।
कास गरीबी-अमीरी की रेखा खत्म हो जाती,
और गरीबों को सिर्फ उतना भी मिल जाता,
जितना मिल रहा है अमीरों के कुत्तों को।।9।।
अंतरिक्ष खोज और चाँद सितारों की बातें ठीक हैं,
भौतिक प्रगति होनी ही चाहिए।
पर इतनी नहीं कि गरीबों को,
दिन में ही सितारे नजर आने लगें।।10।।
इस विषमता को मिटाने,
है जन जागृति की जरूरत।
परोपकार की ज्योति जगे जब सबके मन में,
तभी हो सकेगा गरीबों का उद्धार,
और सदा के लिए मिट जाएगी गरीबी की रेखा।।11।।

४८
मानवता को बचाओ

क्या जमाना आ गया,
अब भाई-भाई का गला काटने को नहीं झिझकता,
और हम कहते कि विकास हो रहा।।1।।
हम अन्तरिक्ष में पहुंच गए,
चांद पर उतरे,
सितारों पर जा रहे,
पर अपने आपसे दूर भाग रहे।।2।।
क्या हमने कभी सुनी है भीतर की आवाज,
यदि कभी सुनी होती,
तो ये करुण क्रंदन न होता।
जो हम सुबह से शाम तक,
रात से दिन तक सुनते,
और सुबह-सुबह ही पढ़ते,
इतने मरे उतने घायल।।3।।
सभ्यता के नाम पर हम बहुत गर्व करते,
पर हैं जानवर से भी गए बीते, ये नहीं जानते,
वे तो भूख लगने पर ही खाते हैं,
पर हम तो दिन रात खाते रहते दूसरों का हक।।4।।
कभी थकते नहीं धन दौलत बटोरने से,
जानते हुए भी कि पल से पल में क्या हो जाए।
ये सब पाप कर रहे किसके लिए,
क्या संतान, सुख चैन, आराम के लिए।।5।।
जब आराम हराम कर दिया दूसरों का,
क्या हमें कभी मिल सकता।
क्या ये भाव कभी मन में आते,
क्या मुरझा गए वे तंतु, जिनसे होता था इनका संचार।।6।।

दानवता की भीषणता से,
अब वे हो गए निष्क्रिय लाचार।
अब क्या करें, यही कि जगाएं उस सोई शक्ति को,
जिसने सोने की चिड़िया बनाया था कभी इस देश को।
उठो, जागो अभी भी वक्त है, संभल जाने का।।7।।
पश्चाताप की आग से जला दो,
मैल की पर्त, जो चढ़ी कंचन सी काया पै,
लगा लो गले से उन्हें, जिन्हें ठुकराते रहे।
और जिनका हक छीन-छीन कर,
मौज-मस्ती उड़ाने का नाटक रचाते रहे।।8।।
आओ प्रेम की गंगा में नहाओं,
कटुता, द्वेष, वैर सभी त्याग,
सच्चे देश भक्त हो अगर, तो देश को ही नहीं,
अत्याचार-अश्लीलता के गर्त में जा रही, मानवता को बचाओ।।9।।

४९
मानव सेवा

चाह किसकी नहीं कि सुख शांति मिले।
पर राह विपरीत ली, शांति कैसे मिले।।1।।
धन बल का गर्व करके गर्त में जा रहे।
जिस डाल पर बैठे उसी को काट रहे।।2।।
जीवन दिन चार का, फिर बात करते युगों की।
मृगतृष्णा में यों ही बिता दी सारी जिंदगी।।3।।
शेष बचे जो पल, सम्हाल लीजिए।
मानव जीवन को सार्थक कर दीजिए।।4।।
कण कण में ईश व्याप्त फिर खोजते कहाँ।
जहां भी पुकारो सच्चे दिल से उसे पाओगे वहाँ।।5।।
उसकी खोज में अब समय न गवांइए।
जहां जैसे हो निस्स्वार्थ मानव सेवा में जुट जाइए।।6।।
इससे ही मिलेगी सच्ची शांति।
मिट जाएगी मन की जलन और सारी भ्रांति।।7।।

५०
विषमता उंगलिओं जितनी

प्रकृति की कृति को देखो,
सबका सिस्टम एक सा बनाया।
कुछ भिन्नताएँ भले ही हों,
पर मूल तत्व एक ही पाया।।1।।
जीव-जन्तु हों या नर-नारी,
कई क्रियाएँ एक जैसी।
फिर इंसान ही की हरकतें,
क्यों हैं अजूबा ऐसी।।2।।
कि एक के लिए आलीशान कक्ष,
साज सज्जा से भरपूर।
वहीं दूसरों को झोपड़ी में रहने को,
करते रहते मजबूर।।3।।
इसी का झगड़ा आदिकाल से चला आया।
देव-दनुज, ऊँच-नीच, जात-पाँत का भेद बताया।।
इस भेदभाव को जब तक कायम रखेंगे।
कर लें लाख यत्न, इसके रहते, न सुखी रह सकेंगे।।4।।
विषमता हो भी जरूरी तो कितनी।
हमारी उंगलिओं जितनी।।
जो बराबर नहीं होती।
पर काम करने में बराबर दीखती।।5।।
ऐसे ही हैं सभी इंसान।
जिनके भीतर है वही एक भगवान।।
ऐसा समझ भेदभाव छोड़, सबको गले से लगाओ।
दुश्मन भी दोस्त बनें, ऐसा जादू चलाओ।।6।।
यह न करोगे तो, कहर ढ़ह जाएगा।
विषमता त्याग देखो, स्वर्णिम युग आ जाएगा।।7।।

५१
शांति भाईचारा में

प्रभो ! मुझे वो शक्ति दो, कर सकूं वो जो है मेरी चाह।
ला सकूं उन भूले भटकों को, उस राह पर जो है सच्ची राह।।1।।
देश की दुर्गति हो रही, धरा रसातल को जा रही।
पापाचार, अनाचार, अत्याचार की बाढ़ में, मानवता कराह रही।।2।।
इन्सान में जब इन्सानियत न रहेगी, क्या करेंगे अंतरिक्ष में जाकर।
जब हम न देख सकेंगे झांक के अपने ही अन्दर।।3।।
क्या लाभ उस ज्ञान के भंडार का, जो हमें अपनी ही पहचान न करा सके।
राग द्वेष, बैर हिंसा में उलझी, मानवता को न छुड़ा सकें।।4।।
हम सब कुछ भूलकर, न जाने किस गर्त में जा रहे।
अपनों को ही मारकर, अपनी लाश को जला रहे।।5।।
कब तक चलेगा ये तांडव, भीषण अमानवीय कृत्य।
अमूल्य क्षण खोए बहुतेरे, अब न गवाओं अमूल्य रत्न।।6।।
जुट जाओ प्राणि मात्र सेवा में, यही सच्ची प्रभु पूजा।
देश भक्ति, समाज सेवा जैसे सुकर्म से, न कर्म श्रेष्ठ दूजा।।7।।
मंदिर मस्जिद, गुरूद्वारा, चर्च, सभी का एक ही पैगाम।
जो जैसा करता उसे भोगना पड़ता, वैसा ही अन्जाम।।8।।
उठो जवानों, संभालो आत्म विश्वास, आ जाओ मुख्य धारा में।
हम लालायित हैं गले लगाने, देखो क्या शांति है भाईचारा में।।9।।
पर शर्त यही दिल से करें पश्चाताप, अब न जाएंगे अन्यत्र।
बनाएंगे देश को समृद्ध, फैले इसकी कीर्ति पुनः सर्वत्र।।10।।

५२
पशु पक्षी भले या हम

जितने दानों की होती जरूरत उतने ही चुगते,
बाकी सब अपने साथियों के लिए छोड़ देते।
दूसरी ओर हम हैं जो जरूरत न होते हुए भी,
अनवरत दूसरों का हक बटोरते रहते।।1।।
जरा सोचिए ये पशु पक्षी भले हैं या हम,
जो केवल अपने लिए ही सोचते।
और अगर अपने मतलब की न होती बात,
तो लौटकर भी नहीं देखते।।2।।
इस जग की ये उल्टी रीति,
सदा से बनी रही।
सही परिप्रेक्ष्य में सच बात,
शायद ही कभी कही।।3।।
मानव जो दानव बना बैठा,
उसे कहते पशु-पक्षी से ऊँचा।
सच तो यही कि जो है पतित,
वह है पशु-पक्षी से भी बहुत नीचा।।4।।
भूख न होने पर बाघ भी न खाएगा।
अगर न करो छेड़-छाड़ तो, सर्प भी भाग जाएगा।।
पर हम मानव हैं ऐसे दानव, जो बिना भूख खाते।
और स्वयं कष्ट झेलकर भी, दूसरों को दुख पहुँचाते।।5।।
मानव बनना है तो मानवता सीखनी होगी।
वह यही कि प्राणिमात्र पर करुणा करनी होगी।।
तभी हम उठ सकेंगे पशु-पक्षी से ऊपर।
और ला सकेंगे जन्नत इस जमीं पर।।6।।

.......लेखक परिचय
(पूर्व पृष्ठ से जारी)

(5) केन्द्रीय सरकारी सेवा सहकारी भूमि तथा गृह निर्माण समिति, नोएडा के कार्यकारी निदेशक (1992-96)

(6) गीता रामायण समिति (पंजी.) नोएडा, के संस्थापक सदस्य (1990)

(7) श्री रामचरितमानस सत्संग समिति (पंजी.), नोएडा के महासचिव (1993 से अब तक)

लेखन कार्य : (1) **हिन्दी अकादमी दिल्ली** के सौजन्य से स्वरचित 79 कविताओं का संग्रह **'भक्ति पुष्प'** सन् 1991 में प्रकाशित।

(2) **'जल विज्ञानीय प्रेक्षण संदर्भ पुस्तिका'** हिन्दी में तैयार की (अप्रकाशित) जो आज भी निचली यमुना मंडल, केन्द्रीय जल आयोग, आगरा के स्थलों पर प्रयोग में लाई जा रही है।

(3) केन्द्रीय जल आयोग की त्रैमासिक पत्रिका **'भगीरथ'** का संपादन किया। (सन् 1987 से 1989)

(4) केन्द्रीय सचिवालय हिन्दी परिषद् की त्रैमासिक पत्रिका **'विज्ञान गंगा'** का संपादन किया। (सन् 1988 से 1989 तथा 1998 से अब तक)

(5) केन्द्रीय सचिवालय हिन्दी परिषद् द्वारा सन् 2003 में **'वैश्वीकरण एवं हिन्दी'** पर आयोजित महासम्मेलन की स्मारिका का संपादन किया।

(6) श्रीरामचरित मानस सत्संग समिति की **वार्षिक स्मारिका** के अब तक 17 अंक संपादित किए।

(7) **तकनीकी विषयों पर** 11 लेख (हिन्दी में) लिखे तथा उन्हें विभिन्न सम्मेलनों में प्रस्तुत किया अथवा वे विभिन्न पत्रिकाओं में प्रकाशित हुए। इसी क्रम में 18 लेख अंग्रेजी में प्रकाशित हुए।

केन्द्रीय जल आयोग के आगरा मंडल में वर्ष 1983-84 में सम्पूर्ण कार्य राजभाषा नीति के अनुसार शत्-प्रतिशत हिन्दी में संपादित कराने के लिए अखिल भारतीय राजभाषा सम्मेलन में सितंबर, 1985 में माननीय प्रधानमंत्री जी से **राजभाषा शील्ड तथा प्रशस्ति पत्र** प्राप्त किया। अन्य कई अवसरों पर भी राजभाषा नीति के उत्कृष्ट कार्यान्वयन हेतु सम्मानित किया गया। सितम्बर, 2000 में इस हेतु **अन्तर्राष्ट्रीय संस्था द्वारा विश्व हिन्दी सम्मेलन में सम्मानित किया गया।**

सप्त सुमन

डॉ. भगवान दास पटैरया

नोएडा
भाद्रपद सं. 2067
सितंबर, 2010

सप्त सुमन

विक्रमी संवत् 2067
प्रथम संस्करण : सन् 2010 ई.

© श्रीमती कुसुम पटैरया
डी-11, सैक्टर-36
नोएडा-201303

मूल्य : 25 रूपये

मुद्रक : एक्सलप्रिंट
सी-36, फ्लैटेड फैक्ट्री कॉम्प्लेक्स
झण्डेवालान, नई दिल्ली-110055

Sapt Suman (Collection of Poems) Rs.25/-

लेखक परिचय

जन्म - ग्राम - बलचौर, जिला - महोबा (उत्तर प्रदेश), नवम्बर (1946)

शिक्षा - (1) हिन्दी माध्यम से उच्चतर माध्यमिक परीक्षा (1964)

(2) सिविल इंजीनियरी में डिप्लोमा (1967)

(3) सिविल इंजीनियरी में स्नातक डिग्री (1971)

(4) अमेरिका के कैलीफोर्निया विश्वविद्यालय से 'जल विज्ञान' में स्नातकोत्तर प्रमाणपत्र (1983)

(5) आरोग्य मन्दिर गोरखपुर से प्राकृतिक चिकित्सा एवं योग में डिग्री (1995)

अनुभव : (क) **तकनीकी क्षेत्र :** सन् 1967 से 1974 तक मध्य प्रदेश विद्युत मंडल में ओवरसियर/सहायक इंजीनियर के पद पर कार्य किया। तत्पश्चात जून 1974 में 'केन्द्रीय जल इंजीनियरी (ग्रुप ए) सेवा से केन्द्रीय जल आयोग में सेवा प्रारंभ की और नवंबर 2006 में मुख्य इंजीनियर के पद से सेवा निवृत्त।

(ख) **राजभाषा हिन्दी तथा अन्य क्षेत्र** (1) उपसचिव, भारत सरकार, राजभाषा विभाग (गृह मंत्रालय) के पद पर कार्य किया। (1989-93)

(2) केन्द्रीय सचिवालय हिन्दी परिषद के महामंत्री एवं उपप्रधान के रूप में कार्य किए।

(3) भारत सरकार के निम्नांकित मंत्रालयों की हिन्दी सलाहकार समिति के सदस्य रहे/हैं:- विज्ञान एवं प्रौद्योगिकी मंत्रालय, खान मंत्रालय, पोत परिवहन विभाग, कृषि मंत्रालय, पर्यावरण एवं वन मंत्रालय तथा जल संसाधन मंत्रालय।

(4) सेक्टर 36, नोएडा की निवासी कल्याण संस्था (RWA) के सचिव (1988-90)

अंतिम पृष्ठ पर जारी....